

Mob Lynching : A social stigma

By Leo Cornelio SVD

Archbishop of Bhopal

People around the world are aware that India is a multilingual, multi-religious and multicultural nation. Every citizen has freedom of thought, faith, religion, worship and expression. One of the most important things is that in the cosmic system of India lies the "rule of law". It is expected that every citizen should not violate the law and not do any illegal act.

If any person has committed a crime, then the right to punish him is law, not to the general public. No one has the right to take the law into his own hands and punish the culprit himself, it is legally wrong and morally unjust too. Such incidents harm the social integrity of the nation and provide the basis for divisive powers to spread the unrest in the country. Therefore, it is necessary for the government to take strict action to prevent such kind of incidents which is happening around the country.

The psychology of the crowd is a small part of social science; it can be called mob psychology. This is a weird and old way. The crowd considers themselves to be above all the law and narrate their violent behavior as practical and necessary. Crowd eliminates the way to resolve issues through the conscience, understanding and ability of negotiation.

In recent times, there have been incidents of mob lynching in many places of our country as well as to the extent that people have been caught and killed by the crowd. In these incidents, the so-called accused are of eating beef, rape convicted or slaughtering the cattle, or guilty of robbing someone else. In Kashmir, a police officer recently killed by a mob without any reason.

Any civilized person will never hesitate to say that killing or violence by the mob is unfair and criminal acts, because the crowd never gives an opportunity to examine, understand or tell the accused their side. Crowds allure each other and all people do violence in illogical ways. Such acts are violation of natural justice, without proper process of law. Fake news surfacing in social media adds fuels to such incidents. So, people need to be aware and cautious about the fake news which entice the people and creates havoc. In one part of the country there was surfacing a news that child thief gang is active in the area. People got influenced by such viral news and killed many people in isolated incidents without confirming their innocence. Even if they were culprit, nobody has right to kill anyone.

It is often seen in our country that the crowd is taking the law into its own hands. If we look at the history of the world thousands of years ago, then it will be found that such incidents were at that time more often but whoever the ruler at that time used to take strict measures to stop such incidents. Civil society never encourages such evil tradition. Behind this violence, anxiety and

panic can be considered responsible. People in our country go from one state to another to get employment. Most of them belong to poor section. It is being seen that the people of the poor community are attacked by the crowd more easily. In the last few days, cases of mob lynching have surfaced in many states. Even the State Government and the Central Government has hard time to tackle the situation.

There have been many incidents of mob lynching in our country in past years. Behind these incidents, Gauraksha, communal or ethnic hatred, rumors of lifting a child etc. were included. These are only figures of 9 states. Most of the incidents of mob lynching have occurred in Assam, Jharkhand, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, Maharashtra, Bihar, Tripura, Jammu and Kashmir.

At present, if any person is caught while committing an offence, he is punished by the crowd instead of handing over to the law authority, nor do they hesitate to take his life, which is utterly inappropriate. Many such incidents are happening in our country in different states, for the different reasons like killing of cow, rape, theft, child lifting etc.. Some anti-social elements are taking law into their own hands, which is a blot on this civilized society which can never be erased. The biggest irony is that in most cases the crowd has taken the lives of innocent people only on the basis of suspicion. Just recently a bullet hit an inspector shot to death in Bulandshahar by the violent mob who went to handle the law and order for the situation. It presents a horrific picture of Indian society. Nowadays, such violence is seen in political protests in the country and is often causing huge damage to the property of the nation. Perhaps this crowd mechanism does not know that it is compensated by the tax we have given to the government. The Central Government has taken it seriously and has also announced to make strict rules, but no social-political team is coming forward to solve this serious problem. The common man of the country is feeling insecurity in his own country due to the increasing cases of mob lynching. In the past, the Supreme Court has taken cognizance of this problem. It is felt that educationist, all the political parties and religious leaders should unite by making their opinions and spreading awareness about the ill practice surfacing in our society in order to create a decent society and to prevail a peace loving society.

भीड़ द्वारा हिंसा एक सामाजिक कलंक

विश्व भर के लोगों को ज्ञात हैं कि, भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र हैं। यँहा प्रत्येक नागरिक को विचार, विष्वास, धर्म, उपासना और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हैं। एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी हैं कि भारत की लौकिक प्रणाली में “विधि का शासन “ निहित हैं। यँहा प्रत्येक नागरिक से अपेक्षा की जाती हैं कि वह कानून का उल्लंघन न करें और किसी प्रकार की गैरकानूनी विधि न करें।

यदि किसी व्यक्ति से कोई अपराध हुआ हैं तो उसे सजा देने का अधिकार कानून को हैं न कि आम जनता को। किसी को यह अधिकार नहीं हैं कि वह कानून को अपने हाथ में लें और अपराधी को स्वयं सजा दे यह कानूनी तौर पर तो गलत हैं ही और नैतिक रूप से भी अनुचित हैं। ऐसी घटनाएं देश की एकता व अखण्डता को नुकसान पहुँचाती हैं तथा विखण्डनकारी शक्तियों को देश में अशांति फैलाने के लिये आधार उपलब्ध कराती हैं। अतः ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके इसके लिये सरकार को कड़े कदम उठाना आवश्यक हैं।

भीड़ का मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञान का एक छोटा सा हिस्सा हैं इसे मोब साइकोलॉजी कह सकते हैं। यह एक अजीब और पुराना तरीका हैं। जिसकी प्रांसगिकता समाज में स्थिरता आने और कानून व्यवस्था के उपर भरोसे के बाद खत्म होती गयी। भीड़ बहुसंख्यक लोकतंत्र के एक हिस्से के तौर पर दिखती हैं खुद ही कानून का काम करती हैं। भीड़ स्वयं को सही मानती हैं और अपनी हिंसावृत्ति को व्यवहारिक और जरूरी बताती हैं। भीड़ सभ्य समाज की सोचने और समझने की क्षमता और बातचीत से मसले सुलझाने का रास्ता खत्म कर देती हैं।

पिछले कुछ समय से हमारे देश के अनेक प्रदेशों में पिटाई करने ओर यहाँ तक कि भीड़ द्वारा लोगो को पकड़कर मार डालने की घटनाएं भी हुई हैं। इन घटनाओं में कोई गोमांस

खाने का तथाकथित आरोपी तो, कोई दुष्कर्म का आरोपी या और कोई गायों को वधषाला के लिये ले जाने का तथाकथित दोषी हो तो और कोई चोरी करने का दोषी हुआ हो। कश्मीर में तो हाल ही में एक पुलिस अधिकारी को भी बिना वजह ही भीड़ ने पीट पीट कर मार डाला।

कोई भी सभ्य व्यक्ति यह कहने में कभी संकोच नहीं करेगा कि से भीड़ द्वारा हिंसा या हत्या कर देना अनुचित व अपराधिक कृत्य हैं, क्योंकि भीड़ कभी भी सत्य को परखने, समझने या आरोपी को अपना पक्ष बताने का अवसर नहीं देती। भीड़ एक दूसरे को भटकाती हैं और सभी लोग अतार्किक तरीके से हिंसा करते हैं। ऐसे कृत्य से कानून, विधि की उचित प्रक्रिया न होकर प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन होता है।

वर्तमान में हमारे देश में यह अक्सर देखा जा रहा है कि भीड़ कानून को अपने हाथों में ले रही हैं। अगर हम हजारों साल पहले दुनिया का इतिहास देखे तो यह पाएंगे कि ऐसी घटनाएं उस समय यदा कदा होती थीं और जो भी शासक रहता था वह ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिये कठोर से कठोर कदम उठाता था। सभ्य समाज कभी भी ऐसी बुराईयों को प्रोत्साहित नहीं करता। इस हिंसा के पीछे चिंता और घबराहट के माहौल को जिम्मेदार माना जा सकता है। हमारे देश में रोजगार के लिये विभिन्न राज्यों में लोगों का आना जाना लगा रहता है। ऐसा देखा जा रहा है कि गरीब तबके के लोग ही भीड़ द्वारा हिंसा के शिकार होते हैं। विगत दिनों में कई राज्यों में मॉब लिचिंग के मामलों सामने आये हैं जिन्हें राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार भी रोकने में असमर्थ रही।

विगत वर्षों में हमारे भारतवर्ष में मोगलिचिंग की कई घटनाएं हुई हैं, इन घटनाओं के पीछे गौरक्षा, साम्प्रदायिक या जातीय घृणा, बच्चा उठाने की अफवाह आदि शामिल थे। यह आकड़े महज 9 राज्यों के आकड़े हैं। जिसमें सबसे ज्यादा मोब लिचिंग की घटनाएं असम, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, त्रिपुरा, जम्मू कश्मीर में हुई हैं।

वर्तमान में हमारे देश में यदि कोई युवक चोरी करते हुए पकड़ा जाता है तो उसको कानून के हवाले ना करते हुए भीड़ के द्वारा दंडित किया जाता है जो कि सरासर अनुचित है। ऐसी कई घटनाएं हमारे देश में निरंतर विभिन्न राज्यों में हो रही हैं। कभी गौ हत्या को लेकर तो कभी बलात्कार को लेकर कुछ असामाजिक तत्व को कानून अपने हाथों में ले रहे हैं जो इस सभ्य समाज पर एक ऐसा धब्बा है जो कभी नहीं धुल सकता। और यह भारतीय समाज का एक भयावह चित्र प्रस्तुत करती है। देश में होने वाले राजनैतिक आंदोलनों में भी ऐसी हिंसा देखी जा रही है और अक्सर राष्ट्र की सम्पत्ति को भारी नुकसान पहुँच रहा है। शायद यह भीड़ तंत्र नहीं जानता कि हमारे द्वारा सरकार को दिये गये टैक्स से ही इसकी क्षतिपूर्ति होती है। केंद्र सरकार ने इसे गंभीरता से लिया है और कठोर नियम बनाने की भी घोषण की है लेकिन राजनैतिक पार्टियां वोट के लालच में इस गंभीर समस्या को हल करने के लिये आगे नहीं आ रही हैं। जिससे कि देश का आम आदमी भी असुरक्षा की भावना महसूस कर रहा है। विगत दिनों में सुप्रीम कोर्ट ने इस समस्या पर अपना संज्ञान दिया है। ऐसा महसूस होता है कि मोब लिंचिंग पर सभी राजनैतिक दल व सभी धर्मों के धर्म गुरु समाज सेवी, शिक्षाविद एकमत होकर अपनी राय बनाए जिससे कि एक सभ्य समाज का निर्माण हो एवं समाज में व्याप्त भय का निवारण हो।

आर्चबिषप लियो कार्नेलियो की कलम से